

जयपुर जिले में खनिजों पर आधारित उद्योग : वर्तमान और भविष्य की संभावनाएँ

सारांश

उद्योग शब्द अंग्रेजी के 'इण्डस्ट्री' शब्द का समार्थी है जिसका अर्थ है। कच्चे माल से वस्तुओं का निर्माण करना। जर्मन इण्डस्ट्री शब्द का अर्थ है। मशीन का उपयोग करके अथवा कार्य करने की आधुनिक पद्धति का उपयोग करके बड़े पैमाने पर संसाधित करना। लैटिन में इण्डस्ट्रियाँ का अर्थ है व्यवसाय अथवा श्रम का निरन्तर उपयोग। उद्योग वह आर्थिक कार्य है जिससे उपयोगी वस्तुओं अथवा सेवाओं का जन्म होता है। उद्योग उन उद्यमों का समूह होता है जो समान आर्थिक वस्तुएं अथवा जनोपयोगी सेवाएं उत्पन्न करता है। प्रत्येक उद्योग श्रम की दक्षता पर आधारित होता है। इस तरह उद्योग शब्द विविध प्रकार के कार्यों का बोधक है। ये कार्य खनिज उत्खनन और अयस्क के गलाने तथा धातुओं को शुद्ध करने से लेकर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का समायोजन तथा सुपर मार्केट तक आते हैं। संक्षेप में उद्योग प्राथमिक कार्यों से पदार्थ लेकर उनको संसाधित करते हैं। उद्योग के स्थल का आकार कृषि की तुलना बहुत कम होता है परन्तु निवेशित पूंजी, श्रम की लागत और निर्मित वस्तु की कीमत बहुत अधिक होती है।

मुख्य शब्द : खनिज उत्खनन, अयस्क, उद्योग श्रम, निवेशित पूंजी, आर्थिक वस्तुएं।

प्रस्तावना

वर्तमान में आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत उद्योग किसी भी देश-प्रदेश या इकाई क्षेत्र में विकास के आधार होते हैं। क्षेत्र विशेष में विनिर्माण क्रियाओं का विकास होने पर ही अर्थव्यवस्था विकसित होती है। समग्र, संतुलित एवं त्वरित औद्योगीकरण प्रत्येक व्यक्ति को उचित मूल्य पर वस्तु, वृहत रोजगार एवं प्रति व्यक्ति उच्चतर आय प्रदान करता है।

खनिजों की अर्थव्यवस्था में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका होती है बल्कि एक राष्ट्र के औद्योगिक विकास की धुरी होते हैं। राज्य की खनन क्रियाएं राज्य अर्थव्यवस्था की जीवन-रेखा हैं। यही कारण है कि विश्व में अब समाज का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन-दर्शन प्रस्तर और प्रस्तर आधारित उत्पादनों में पूर्णतया समाहित हो गया है।

जयपुर जिले को राज्य का एक पिछड़ा जिला नहीं माना जा सकता है। प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद राज्य में स्थानीय संसाधनों पर आधारित इकाइयों की स्थापना हुई है। जिले की अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता इसके अधिकांश क्षेत्र वर्षा पर निर्भर है और यह अनिश्चित और असामयिक है। इन दशाओं में स्थानीय संसाधनों पर आधारित लघु उद्योग जीवन निर्वहन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं तथा राज्य अर्थव्यवस्था की आय और उत्पादन में वृहत भाग का अंशदान करते हैं। इसके अतिरिक्त लघु पैमाने के उद्योग औद्योगिक सेक्टर के विकास और मजबूती में सार्थक योगदान करते हैं। ये उद्यमियों के लिए प्रबन्धन गुणों के अवसरों के साथ जिले के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार के उद्योग सापेक्षित रूप में अधिक रोजगार के अवसर भी निम्न पूंजी लागत पर प्रदान करते हैं और अतिरिक्त मानव शक्ति को कृषिगत क्षेत्र में रोजगार देते हैं ऐसे में अध्ययन क्षेत्र के स्थानीय खनिज-आधारित उद्योग श्रम प्रदान होने से महत्वपूर्ण है जिनका विकास अध्ययन क्षेत्र की मरु भूमि पर हुआ है।

वर्तमान शताब्दी के आरम्भ से ही औद्योगिक भूगोल आर्थिक भूगोल का प्रमुख अंग रहा है। भूगोल की व्यापक परिभाषा के आधार पर आर्थिक भूगोल को आर्थिक क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं का स्थानिक वितरण एवं व्याख्या करने वाली शाखा माना गया है। आर्थिक क्रियाओं में औद्योगिक क्रियाएँ प्रमुख हैं। इस आधार पर औद्योगिक भूगोल को 'औद्योगिक क्रियाओं के स्थानिक विन्यास का



बाबू लाल मीना
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

अध्ययन कहा जा सकता है। अलेक्जेंडरसन ने औद्योगिक भूगोल को परिभाषित किया है कि 'औद्योगिक भूगोल में उद्योगों' के वर्तमान भूमण्डलीय, महाद्वीपीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक अथवा नगरीय वितरण के प्रतिरूप की विवेचना की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

जयपुर शहर जो कि गुलाबी नगर के नाम से भी जाना जाता है। यह शहर बहुत ही सुदृढ़ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का धनी है। यह राजस्थान राज्य की राजधानी भी है। विश्व के पर्यटन मानचित्र में अपना अलग महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्पूर्ण जिला (ग्रामीण एवं नगरीय) को सम्मिलित किया गया है। जयपुर राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 11588 वर्ग कि.मी. है तथा जिले की कुल जनसंख्या 52,51,071 है। इसका अक्षांशीय एवं देशान्तरीय विस्तार 26° से 23° से 27° 51' उत्तरी अक्षांश तथा 74° 50' पूर्वी देशान्तर है। जिले की साक्षरता 70.61 प्रतिशत, लिंगानुपात 1000:897, जनसंख्या घनत्व 471 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

जयपुर जिले में 13 तहसील हैं, जो कि जयपुर, बस्सी, चाकसू, सांगानेर, आमेर, जमवारामगढ़, चौमू, फुलेरा, दूदू, फागी, कोटपूतली, विराटनगर एवं शाहपुरा भाग विभाजित है। जिले में वन 944.52 वर्ग कि.मी. में फैले हुए हैं। यहां की मिट्टी कच्छरी प्रकार की है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन जिले में खनिज आधारित उद्योगों का मूल्यांकन करना।
2. आय और रोजगार सृजन में उद्योग के महत्व की पहचान करना।
3. उद्योग की विभिन्न प्रक्रियाओं में लागत संरचना का विश्लेषण करना।
4. उद्योग के सामयिक और स्थानीय विकास का विश्लेषण करना।
5. उद्योगों के गुणात्मक तथा मात्रात्मक वृद्धि के लिए सुझाव देना।

परिकल्पना

1. जयपुर जिले में स्थानीय खनिजों पर आधारित औद्योगिक क्रियाओं के लिए अवस्थित कारक जैसे कच्चे पदार्थ, जलापूर्ति, मांग, यातायात सम्बन्धिता तथा संरचनात्मक सुविधाएं आदि अनुकूल कारक उपलब्ध हैं।
2. अध्ययन क्षेत्र में परिवहन एवं संचार, सिंचाई, शक्ति, औद्योगिक प्रशिक्षण आदि कारकों के ऐतिहासिक विकास के साथ-साथ औद्योगीकरण में निरन्तर वृद्धि हुई है।
3. जिले के पूर्ण औद्योगिक विकास में विभिन्न औद्योगिक कारकों जैसे जलाभाव, ऊष्ण जलवायु आदि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से बाधक हैं।

शोध विधि व समंको का स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दोनों ही प्रकार के समंको प्राथमिक एवं द्वितीयक का प्रयोग किया गया है। अध्ययन विषय की परिधि में दोनों ही प्रकार से प्राप्त सूचनाओं एवं समंको का विश्लेषण करने के उपरान्त

सर्वोत्तम सम्भावित शोध परिणाम, सांराक्ष एवं सुझाव तैयार करने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक समंको के संग्रहण हेतु एक प्रश्नावली तैयार की गयी जिसका वृहतक उपयोग खनिज आधारित उद्योगों के विभिन्न पहलुओं के प्रतिदर्श अध्ययन में किया गया है।

साहित्यावलोकन

इस क्षेत्र के प्रमुख भूगोलवेत्ता—डी.एम.स्थिम, अलेक्जेंडर, रॉबस्ट्रान एलन प्रेड डिकेई, नैनर, मर्फी और थाम्पसन हैं। इसी प्रकार प्रमुख अर्थशास्त्रियों में लून्हरहट, ए. वेबर, पेलेण्डर, इजार्ड, ए.लाश, ए.ई. हूवर, ए.ई. स्मिथ, हाटलिंग और एम.एल.ग्रीनहंट, आते हैं। इसमें से महत्वपूर्ण सिद्धांतों का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार है।

अल्फ्रेड वेबर (1929) ने अपने न्यूनतम लागत सिद्धांत में किसी कारखाने की अवस्थिति परिवहन लागत की भूमिका को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। इसके पश्चात् श्रम लागत तथा समूहीकरण के प्रभाव को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार प्लांट उसी स्थिति पर लगेगा, जहाँ न्यूनतम लागत आती है। इसी संदर्भ में उन्होंने आइसोटिम आइसोडापेन पदार्थ निर्देशांक श्रम निर्देशांक विनिर्माण निर्देशांक आदि का प्रयोग किया।

हूवर (1937,48) ने मांग पूर्ति और सरकारी नीतियों के प्रभाव का क्षेत्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार परिवहन लागत की संरचना उद्योग को सर्वाधिक प्रभावित करती है।

ग्रीनहंट (1956-1963) ने न्यूनतम लागत एवं अवस्थिति अन्तरनिर्भरता सिद्धांत दोनों का अवस्थिति विश्लेषण किया। लागत और मांग तत्वों के साथ घटती लागत, राजस्व वृद्धि और व्यक्तिगत तत्वों को भी उन्होंने अपने सिद्धांत में प्रमुखता दी है।

ऑगस्ट लॉश (1954) ने मार्केट एरिया स्कूल प्रस्तुत किया। उनके अनुसार प्लांट की अनुकूल अवस्थिति वहाँ होगी, जहाँ अधिकतम एकाधिकारी बाजार की संभावना होगी और प्लांट अधिकतम लाभ अर्जित कर सकें।

ईजार्ड (1956-1960) ने प्रतिस्थापन सिद्धांत प्रस्तुत किया उन्होंने अवस्थिति की समस्या को स्थानापन्न लागत और उत्पादन राजस्वों के मध्य की स्थानापन्न समस्या माना। उन्होंने लागत और उत्पादन के बीच तुलना की और अधिकतम शुद्ध लाभ को बताया।

संक्षेप में औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांतों को हम तीन भागों में बांट सकते हैं। (1) न्यूनतम लागत स्कूल (2) मार्केट एरिया स्कूल और (3) अन्तरनिर्भरता अवस्थितिक स्कूल ग्रीनहंट और स्मिथ ने समन्वित सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

पचास से अधिक भारतीय भूगोलवेत्ताओं ने विभिन्न उद्योगों के अवस्थिति विश्लेषण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनमें लोकनाथन, प्रकाश राव, कृष्णन, इन्द्रपाल, तिवारी, दुरानी, पाटनी, सिंह, सी.बी. तिवारी, चौधरी, प्रसाद, गुप्ता, राम, सिन्हा, विश्वकर्मा, ए.सिंह, एस. एन., सिंह, शुक्ला, प्रीति माथुर, कापस्था और सिंह, गर्ग, शर्मा, अग्रवाल, हेमलता जोशी, ए.सक्सेना, सत्यदेव, एल. सी. मीना, पी. सिंह, बी. एल. मीणा, बीना सनादय, जे.सी.

कलुवावत, एस. टाकसाली और आर. एन. बैरवा, इत्यादि प्रमुख हैं।

जयपुर जिले में उद्योग की वर्तमान स्थिति

जयपुर जिला औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न बनता जा रहा है। जिले में राज्य व केन्द्र सरकार औद्योगीकरण की ओर विशेष ध्यान दे रही है। जयपुर में कृषि, पशुपालन एवं खनिज उद्योग ही अब जीवन का आधार बनते जा रहे हैं। जिले में कई लघु, मध्यम और बड़े उद्योग तो प्राचीन काल से ही चले आ रहे हैं जयपुर जिला प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है और अनेक प्रकार के कृषि जन्म व नवीन खनिज पदार्थ मिले हैं और भविष्य में मिलने की संभावनाएं हैं। जयपुर पशु सम्पदा में भी घनी है, तथा जिले में कृषि उपजों में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

जयपुर जिले में कई वित्तीय संस्थाएँ, राजस्थान वित्त निगम (रीको) राजस्थान खनिज विकास निगम, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, औद्योगिक बैंक आदि संस्थाएँ विकास की ओर सतत् प्रयत्नशील हैं। क्योंकि जिले के बहुमुखी विकास की संभावना लघु व कुटीर उद्योग में अपेक्षाकृत अधिक है।

राजस्थान के जयपुर जिले में खनिज आधारित उद्योग में नवीन औद्योगिक विकास की संभावनाएँ निम्नानुसार हैं। खनिज: खनिज पिसाई, जिप्सम पाउडर पशुधन: ऊन उद्योग, जूट उद्योग, हड्डिया पीसना, चमड़ा उद्योग, बकरी के बालों पर आधारित उद्योग, मुर्गीपालन, डेयरी आदि उद्योग निर्मित हैं। वन बीड़ी उद्योग, इंजीनियरिंग कृषि औजार एवं रिपेयरिंग वर्कशाप आदि का निर्माण करना। अन्य उद्योग: रंगाई व छपाई उद्योग, मगर बत्ती, कारपेट वीविंग, सीमेंट के पाईप व जाली, कांच की कशीदाकारी, मीनाकारी, साबुन व फर्नीचर आदि उद्योग का निर्माण भी किया जाने लगा है।

अतः उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि जयपुर जिले में खनिजों पर आधारित उद्योगों का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है, बशर्ते राज्य व केन्द्र सरकार मिलकर एक साझा प्रयास करें, जिससे खनिजों और उद्योगों की तरक्की में बाधा ना आयें।

खनन उद्योग

खनन जब तक उद्योग के रूप में नहीं था, तथा धातुएँ सीमित व नियंत्रित मात्रा में थी, तब तक खनन से वायु प्रदूषण सीमित होता था, पर जब से खनन ने उद्योग का आकार ले लिया, सम्पूर्ण वायुमण्डल इसकी चपेट में आ गया है। सामान्यतः खाने दो प्रकार की होती हैं:—(1) बन्द खाने तथा (2) खुली खानें। खुली खानों से बहुत ही अधिक मात्रा में खनन पाउडर उत्सर्जित होकर वातावरण में सतत् मिलता रहता है। खनन उद्योग के श्रमिकों पर इस पाउडर की छापा हमेशा मडराती रहती है, तथा उनके सांसों के साथ यह फेफड़ों में प्रवेश करती है। जिससे सिलिकोसिस बीमारी पैदा होती है। जो उनकी अकाल मृत्यु का कारण बनती है। सोप स्टोन व संगमरमर की चिराई से निरन्तर धूल के कणों के समान पाउडर उड़ता रहता है, जो उनके सांस के मिलता रहता है।

जहाँ ये खाने हैं वहाँ पर पेड़-पौधों का जीवन भी कठिनाई में पड़ जाता है, क्योंकि प्रकाश संश्लेषण जो

उनके जीवन की आधारभूत प्रक्रिया है, हमेशा पत्तों पर छाई रहती है। जिस कारण भोजन प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो पाती है। वहाँ की हवा में सतत् सांस लेने वाले मनुष्यों को भी कुछ समय पश्चात् क्रिया में स्वाभाविक दिक्कतें आने लगती हैं।

मानव की बढ़ती जिज्ञासाओं एवं विविध उत्पादनों से मानव की आवश्यकताएँ निरन्तर बदलते समयानुसार बढ़ रही हैं। प्रारम्भिक अवस्था में मानव केवल मूलभूत रोटी, कपड़ा और मकान (आवास) की पूर्ति में ही लगा रहा, परन्तु औद्योगिक विकास ने धीरे-धीरे रपतार पकड़ी तथा मानवीय जीवन शैली में बढ़लाव आया। औद्योगिक विकास के साथ ही मानवीय विलासिता सम्बन्धी आवश्यकताओं की अनुभूति हुई तथा वर्तमान तकनीकी युग में आवश्यकताओं का स्वरूप बड़ा ही जटिल एवं विविध हो गया। जयपुर के औद्योगिक विकास में सबसे महत्व पूर्ण योगदान खनिज आधारित उद्योगों का रहा है, क्योंकि राज्य का ही नहीं अपितु जिले की अर्थव्यवस्था में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

जिले में खनिजों पर आधारित उद्योगों का निरन्तर विकास से रहा है, तथा इनके उज्ज्वल भविष्य की संभावना सुस्पष्ट दृष्टिगोचर होती आ रही है। तथा उद्योगों को पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध हो रहा है। लेकिन वर्तमान में समय में बढ़ रही मानवीय श्रम एवं अन्य उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा इसका प्रमुख कारण है। उद्योगों की पर्याप्त मांग को देखते हुए जिले में अधिक से अधिक खनिज आधारित उद्योग स्थापित किये जाने की जरूरत है। जिनके स्थापित होने की जिले में सभी भौगोलिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

उद्योग किसी भी प्रकार का ही उसकी स्थिति का निर्धारण विभिन्न कारकों, उद्योग विशेष के स्वभाव, उसकी तकनीकी की, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण के आधार पर कारक विशेष का उद्योग पर प्रभाव ज्ञात किया जाता है। औद्योगिक अवस्थिति के प्रमुख भौगोलिक कारकों का विवेचन करने से पूर्व उन प्रमुख औद्योगिक भूगोलवेत्ताओं के दृष्टिकोणों को जानना उचित होगा जिन्होंने औद्योगिक गतिविधियों पर कार्य किया है।

अल्फ्रेड वेबर 1929, ने बताया कि उद्योग की स्थापना उस स्थान पर की जानी चाहिए जहाँ पर न्यूनतम परिवहन लागत आती हो। जार्ज टी. रेनर के अनुसार किसी भी उद्योग की स्थापना उस स्थान पर की जाती है। जहाँ कारक कम खर्च पर एकत्रित किये जा सकते हो। फ्रेंक ए. फेटर (1924) और ऑगस्ट लॉश (1939) ने बताया कि उद्योग की स्थापना ऐसे स्थल पर की जाती है, जहाँ से कारखाने का बाजार क्षेत्र पर आधिकाधिक एकाधिकार हो सकें। जिससे कि अधिकतम लाभ कमाया जा सकें। ई. एम. राष्ट्रीय ने बताया कि अधिकतम लाभ कमाया जा सकें। ई. एम. राष्ट्रीय ने बताया कि भिन्न-भिन्न मदों पर होने वाले भिन्न-भिन्न खर्च के ढाँचे का परीक्षण कर कारखाने की स्थापना अधिकतम लाभ वाले स्थान पर की जा सकें।

जब किसी एक कारक विशेष की लागत एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी अधिक आवश्यक हो जाती है, जबकि उस कारक विशेष की लागत कुल लागत का

बड़ा भाग हो। हूवर (1948) ने बताया कि उद्योग की स्थापना यातायात के न्यूनतम लागत वाले स्थान पर की जाती है।

उद्योगों की अवस्थिति के कारक

जयपुर में खनिज आधारित उद्योगों की अवस्थिति में जिन भौगोलिक कारकों का योगदान रहा है। उनमें स्थानिक चयन, कच्चा माल, श्रम, यातायात, बाजार, शक्ति, जल, पूंजी, सरकारी नीति, उधमकर्ता व जलवायु प्रमुख हैं। उद्योग किसी भी प्रकार का हो इन भौगोलिक कारकों के बिना उद्योग स्थापित नहीं किया जा सकता। उद्योगों के कारकों के महत्व के बारे में रोबिन्सन का यह वाक्य महत्वपूर्ण है—“यद्यपि कतिपय उद्योगों का उद्भव यकायक हो गया फिर भी किसी स्थान विशेष पर उसकी उपस्थिति के पीछे निश्चित कारण रहे हैं। यह स्पष्ट है कि पुराने एवं दीर्घकाल से स्थापित उद्योगों के लिए यह अधिक सत्य है।”

लोगों की समस्याएं, समाधान एवं निष्कर्ष

जिले में केन्द्र व राज्य सरकार ने उद्योगों की स्थापना एवं विकास के लिए अनेक प्रयास किये। लेकिन फिर भी इन उद्योगों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

1. कच्चे माल की समस्या वित्तीय कठिनाई, उत्पादन विधि और संगठन तथा बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्धा।
2. ऊँची उत्पादन लागत, ऊँचा मूल्य और भारी कर भार, सस्ती चालक शक्ति और प्रबन्धकीय दक्षता का अभाव।
3. परिवहन सुविधाओं का अभाव, विज्ञापनों की भारी कमी इत्यादि।
4. सरकारी तंत्र की लचर व दोषपूर्ण प्रणालियाँ, जिससे अपनों को लाभ पहुँचे।

राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और विनियोग निगम (रीको) द्वारा अध्ययन जिले में औद्योगिक विकास के लिये विभिन्न स्थानों पर संरचनात्मक विकास किया जा रहा है। जयपुर जिले में औद्योगिक अभिवृद्धि केन्द्र आदि औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये गये हैं। वर्तमान में विश्व अर्थव्यवस्था के भूमण्डलीकरण और उदारीकरण से यह आवश्यक है कि खनन उद्यमी और उद्योग इस प्रकार का प्रथम विकास करें जिससे वे अपने औद्योगिक उत्पादों के मूल्य और गुणवत्ता को प्रतिस्पर्धा में रख सकें।

मनुष्य द्वारा किए जाने वाले आर्थिक कार्य आखेट तथा मछली पकड़ना, कृषि एवं पशुपालन, उत्खनन, उद्योग, व्यापार तथा परिवहन है। कृषि के बाद उद्योग ही महत्वपूर्ण आर्थिक कार्य है। विकासशील दुनिया में क्रियाशील जनसंख्या का 28.3 प्रतिशत और विकसित देशों में 67.5 प्रतिशत सीधे निर्माण उद्योग में लगे हैं उद्योगों का विकास देश के आर्थिक विकास का मापदण्ड भी माना जाता है। औद्योगिक विकास से जीवनस्तर भी ऊँचा उठता है। यही कारण है कि औद्योगिक केन्द्र नगर पुंजों को विकसित होने में सहायता देते हैं। साथ ही पुंजों में औद्योगिक विकास की सुविधा के कारण अनेक उद्योग आकर्षित होते हैं।

जिले में नवीनतम नीतियों के प्रयत्नों से निम्न सुझाव दिए जा रहे हैं:— उपभोक्ता सेवा निगम, पर्याप्त

कार्यालय जैसी विशिष्ट संस्थाओं की स्थापना, वित्तीय सुविधाओं का विस्तार, उत्पादन तकनीकी में सुधार, अनुसंधान व प्रदर्शनों का विस्तार, प्रशिक्षण व बिक्री सुविधाएँ, बैंकों आदि से जिले की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकें। जिससे जिले में उद्योगों का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर.सी. शर्मा (1972) : सेटलमेन्ट जियोग्राफी ऑफ द इण्डियन डेजर्ट, नई दिल्ली
2. एच.एस. नम (1980) : एवड जोन रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट काजरी, जोधपुर
3. मुस्लिम शेख (1992) : हयूमन इकॉलाजी ऑफ द इण्डिया डेजर्ट ए केस स्टडी ऑफ डिस्टिक्ट इन राजस्थान
4. ए के तिवाड़ी : डेजरफिम्सेन: मानीटरिंग एण्ड कन्ट्रोल, जोधपुर
5. टी एस चौहान (1994) : नेचुरल एण्ड हयूमन रिसोर्सज ऑफ राजस्थान, साइन्टीफिक पब्लिसर, जोधपुर
6. जे ए इलियोट (1995) : इनटरडिम्सन टू संसटेनबल डेवलपमेन्ट, आर्डर यू यूबीएस ऑन 17-1-95 पेज
7. बर्नार्ड गलेसर (1995) : हाउसिंग, संसटेनबल डेवलपमेन्ट एण्ड द रूरल पूअर: ए स्टडी ऑफ तमिलनाडू, नई दिल्ली
8. के, गोपाल अय्यर (1996) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट: इकालाजीकल एण्ड सोसीयोकलचर डाइमेन्शन विकास, नई दिल्ली
9. अनिल के गुप्ता (1991): डार्ट, डिपरिवेसन एण्ड संसटेनबल डेवलपमेन्ट इण्डियन इस्टिट्यूट ऑफ मेनेजमेन्ट, अहमदाबाद
10. के जी अय्यर (1996) : संसटेनबल : डेवलपमेन्ट इकालाजिकल एण्ड सॉसियो कलचर डाइमेशन विकास पब्लिक हाउस, पी वी टी लि देहली
11. एन एस जोधा (1995) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट इन फरोजिल एनवायरमेंट : इन ऑपरेशन फ्रेमवर्क फॉर एरिड सेमी, एरिड एण्ड माउटेन एरिया, सेन्टर फॉर एनवायरमेंट एजुकेशन, अहमदाबाद, सीईई
12. जेम्स जोनिया (1992) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट एण्ड एम्पावर फारेस्टी इन मलेशिया, इंटरनेशनल लेबर ऑफिस, जिनेबा, वर्ल्ड एम्पलायमेंट प्रोग्राम
13. आर एल केरला (1993) : नेचुरल रिसोर्सज मेनेजमेंट : ए न्यू प्रीपेस्कटिव नेशनल नेचुरल रिसोर्सज मेनेजमेंट सिस्टम, इसरो, बंगलौर
14. एस एन लीली (1989) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट ए क्रिकीकल रिव्यू, 'वर्ल्ड डेवलपमेन्ट'
15. मेलकोलम न्यूसन (1993) : लेण्ड, वॉटर एण्ड डेवलपमेन्ट: रिवरबेसिन सिस्टम एण्ड दियर संसटेनबल मेनेजमेंट, न्यूयार्क
16. जे पी जे (1989) : इकॉनामी एनेलेसिस ऑफ संसटेनबल ग्राथ एण्ड संसटेनबल डेवलपमेन्ट उब्लू, पी न. 15, एनवायरमेंट डिपार्टमेन्ट, द वर्ल्ड बैंक वाशिंगटन डी सी

17. दी एन राव (1996) : ह्यूमन रिसोर्सेज डेवलपमेन्ट :
एक्सप्रियेन्स इंटरनेशनल स्टेटिजेस स्यूज, न्यू देहली
18. डेविड रिड (1995) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट इन
इंटसर्ड्यूटरी गाइड अर्थस्केन, लंदन
19. डब्लू इ (1988) : ए रोल फॉर इनवापरमेन्ट एसेसमेंट
इन एचिविंग संसटेनबल डेवलपमेन्ट इनवायरमेन्ट
इम्पेक्ट एसेसमेंट रिव्यू 8 (4) पी पी 273-291
20. वर्ल्ड बैंक (1996) : इनवायरमेंटली संसटेनबल
डेवलपमेन्ट पाटिसीपीएसन सोर्स बुक
21. सेशंस ऑफ इण्डिया (2002) : स्टेटीकल एब्सट्रेक्ट,
जी ओ आर